गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; अप्रैल, २०१९

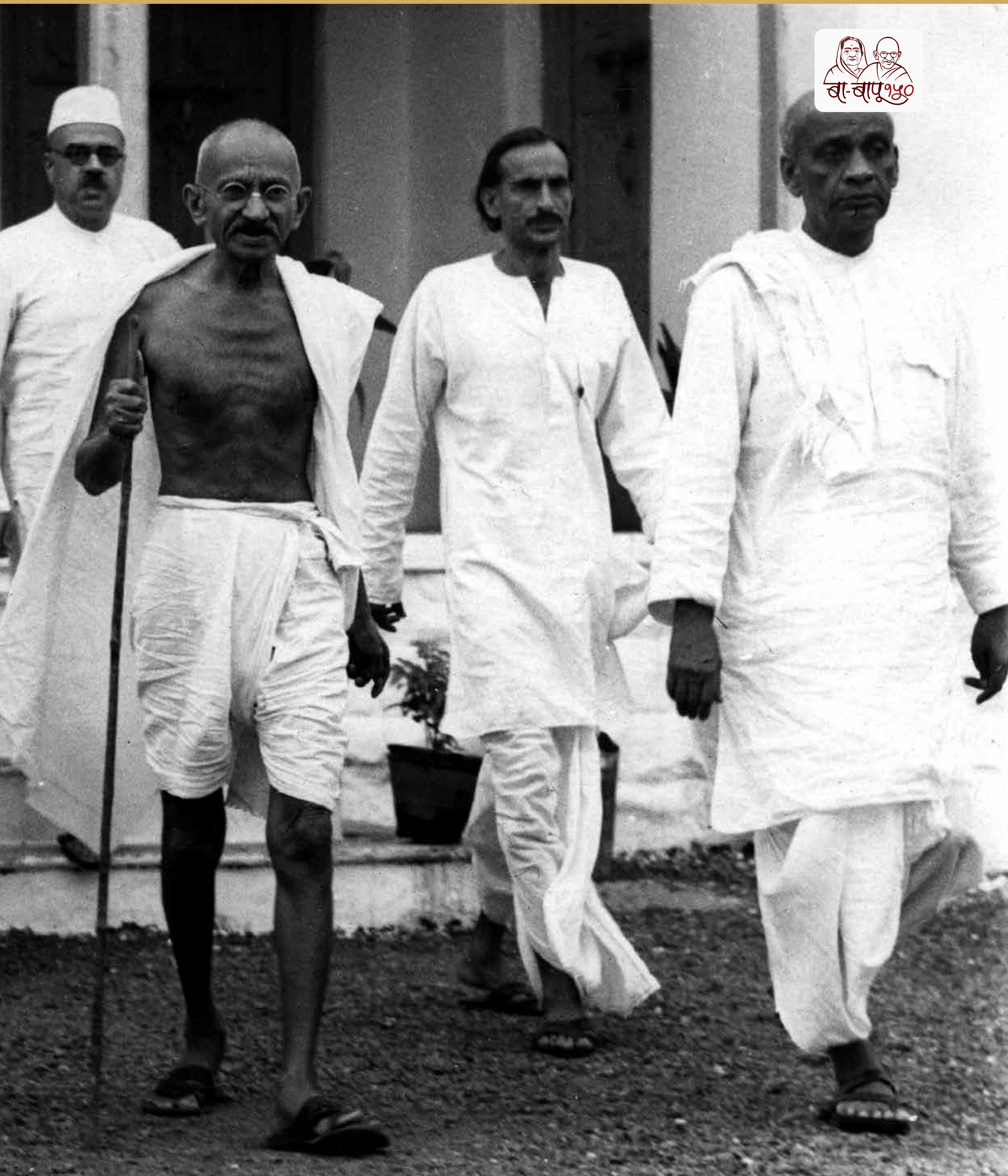

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-१, अंक ३ ◻ अप्रैल, २०१९

••••••••

यदि हमारे अस्तित्व का नियम अहिंसा है तो भविष्य स्त्री के हाथ है।

– महात्मा गाँधी

••••••••

इस अंक में– ....पृष्ठ

संपादकीय...

संसार-प्रवेश १

कस्तूरबा जीवन-झांकीः समय के दायरे में – *(डॉ. सुदर्शन आयंगार)*..३

आज की समाज रचना – *(डॉ. भवरलालजी जैन)*....................४

फाउण्डेशन की गतिविधियां ५-८

भावांजली – डॉ. टी. करुणाकरण–

एक गाँधीवादी चिंतक और ग्रामीण विकास विशेषज्ञ ९

••••••••

संस्थापक

स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक

स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक

अशोक जैन

संपादक

अश्विन झाला

संपादकीय मंडल

डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा

भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,

गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.

दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272

फैक्स : 0257-2261133

वेबसाइट : www.gandhifoundation.net

ई-मेल : info@gandhifoundation.net

CIN No.: U73200MH2007NPL169807

••••••••

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला।

••••••••

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

फॉरवर्ड करें इससे पहले आचरण भी करें

हाल ही में विश्व महिला दिवस मनाया गया। हम सभी को कई संदेश प्राप्त हुए होंगे, बहुत अच्छी बात है, हम हर एक विशेष दिन को बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं, ऐसा दिखाई देता है। दिखाई देता है??? तनिक ठहरिए... ऐसा तो नहीं कि यह केवल और केवल सोशल मीडिया पर ही दिखाई देता हो? जिस तरह से संदेश फॉरवर्ड हो रहे हैं मानो इस विश्व में किसी भी तरह की असमानता, हिंसा, भेदभाव, समस्या होनी ही नहीं चाहिए!!!

संदेश भेजने के इस सिलसिले में हम इतना आगे बढ़ गए हैं कि वह अपनी क्षितिज को विस्तारित करते हुए कई दूर, सीमाओं से दूर, सभी बंधनों से दूर, सभी नफरतों से भी दूर हम संदेश फॉरवर्ड करते हैं, या किए जाते हैं। अगर इतना सब कुछ होता हैं, फिर भी हमारे मानव समुदाय में कई दीवारें क्यों आज भी खड़ी हैं? क्यों हिंसा के कई स्वरूप, शोषण के कई घटक पनप रहे हैं? यह तो विपरीत स्थिति को प्रस्तुत करता है, हम सोशल मीडिया पर तो सक्रिय हैं, किंतु वास्तविक जीवन में निष्क्रिय नजर आते दिखाई देते हैं?

ऐसा क्यों कह रहा हूँ? आइए कुछ तथ्यों पर नजर करें। भारत में सोशल मीडिया पर संदेश फॉरवर्ड करने वालों की संख्या करीब ३० करोड़ हैं। और यह आने वाले दो या तीन साल में दुगुनी हो जाएगी। जिस तरह से खास दिन के विशेष संदेश फॉरवर्ड किए जाते हैं, यह दर्शाता है कि चेतन से भरे इस समाज में हर एक खास दिन को इस तरह से मनाते दिखाई देते हैं, मानो यह उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण दिन बन गया हो! इसमें कोई संदेह नहीं है और हम भी यह कामना करते हैं कि सही मायने में ऐसा हो। लेकिन दुःख की बात तो यह है कि यह केवल एक दिन तक सीमित हो जाता है, फॉरवर्ड किए हुए संदेश में से बहोत कम लोग आचरण करते होंगे। अन्यथा आज समानता आधारित समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा रूपी असमानता क्यों दिखाई देती हैं? और यह असमानता हर तरह से फैली है, मानो संदेश फॉरवर्ड करने से ही हमने अपनी भावना को व्यक्त कर दिया हो, लेकिन आचरण के नाम पर हम भारत में खोज किए हुए शून्य को अधिक स्थान देते हैं। शून्य की अपनी एक कीमत है पर आचरण में इस कीमत का दर्शन ना हो तो ही बेहतर है।

साल में कई विशेष दिन आते हैं, ऐसा ना हो की यह विशेष दिन केवल हमारे मोबाइल स्क्रीन तक ही सीमित हो जाए। आइए इस बार इसे वास्तव में मनाने का प्रयास भी करें, और इससे पहले एक पौधा मोबाइल से फॉरवर्ड करें एक सच्चा पौधा प्रकृति में फॉरवर्ड करें, मतलब लगाएं और बड़ा भी करें। शिक्षा का संदेश फॉरवर्ड करें लेकिन साथ-साथ कई बच्चों को शिक्षा प्राप्त हो ऐसे भी कार्यों को प्रोत्साहित करें। मनुष्य सामाजिक प्राणी है इसे याद रखते हुए, हर एक विशेष दिन तथा त्यौहार को जीवंत स्वरूप में मनाए।

इस अंक में सत्य के प्रयोग से अगला प्रकरण, कस्तूरबा जीवन-झांकी, डॉ. भवरलाल जैन द्वारा लिखित 'आज की समाज रचना' से अगली कड़ी, डॉ. टी. करुणाकरण के जीवन के कुछ अंश एवं फाउण्डेशन के साथ उनके संबंध की गाथा को प्रस्तुत करता विशेष लेख तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद।

(अश्विन झाला)

'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'

संसार–प्रवेश

'खोज गाँधीजी की' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। संसार-प्रवेश की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण। **– संपादक**

बड़े भाईने मुझ पर बड़ी-बड़ी आशाऐं बांध रखी थीं। उनको पैसे का कीर्ति का और पद का लोभ बहुत था। उनका दिल बादशाही था। उदारता उन्हें फिजूलखर्ची की हद तक ले जाती थी। इस कारण और अपने भोले स्वभाव के कारण उन्हें मित्रता करने में देर न लगती थी। इस मित्र-मण्डली की मदद से वे मेरे लिए मुकदमे लानेवाले थे। उन्होंने यह भी मान लिया था कि मैं खूब कमाऊंगा, इसलिए घरखर्च बढ़ा रखा था। मेरे लिए वकालत का क्षेत्र तैयार करने में भी उन्होंने कोई कसर नहीं रखी थी।

जाति का झगड़ा मौजूद ही था। उसमें दो तड़ें पड़ गई थीं। एक पक्ष ने मुझे तुरंत जाति में ले लिया। दूसरा पक्ष न लेने पर डटा रहा। जाति में लेनेवाले पक्ष को संतुष्ट करने के लिए राजकोट ले जाने से पहले भाई मुझे नासिक ले गए। वहाँ गंगा-स्नान कराया और राजकोट पहुँचने पर जाति भोज दिया।

मुझे इस काम में कोई रुचि न थी। बड़े भाई के मन में मेरे लिए अगाध प्रेम था। मैं मानता हूँ कि उनके प्रति मेरी भक्ति भी वैसी ही थी। इसलिए उनकी इच्छा को आदेश मानकर मैं यंत्र की भांति बिना समझे उनकी इच्छा का अनुसरण करता रहा। जाति का प्रश्न इससे हल हो गया।

जाति की जिस तड़से मैं बहिष्कृत रहा, उसमें प्रवेश करने का प्रयत्न मैंने कभी नहीं किया, न मैंने जाति के किसी मुखिया के प्रति मन में कोई रोष रखा। उनमें मुझे तिरस्कार से देखनेवाले लोग भी थे। उनके साथ मैं नम्रता का बरताव करता था। जाति के बहिष्कार-संबंधी कानून का मैं संपूर्ण आदर करता था। अपने सास-ससुर के घर अथवा अपनी बहन के घर मैं पानी तक न पीता था। वे छिपे तौर पर पिलाने को तैयार भी होते, पर जो काम खुले तौरसे न किया जा सके, उसे छिपकर करने के लिए मेरा मन ही तैयार न होता था।

मेरे इस व्यवहार का परिणाम यह हुआ कि जाति की ओर से मुझे कभी कोई कष्ट नहीं दिया गया। यही नहीं, बल्कि आज तक मैं जाति के एक विभाग में विधिवत् बहिष्कृत माना जाता हूँ, फिर भी उनकी ओर से मैंने सम्मान और उदारता का ही अनुभव किया है। उन्होंने मेरे कार्य में मुझे मदद भी दी है, और मुझसे यह आशा तक नहीं रखी कि जाति के लिए मैं कुछ-न-कुछ करूं। मैं ऐसा मानता हूँ कि यह मधुर फल मेरे अप्रतिकार का ही परिणाम है। यदि मैंने जाति में सम्मिलित होने की खटपट की होती, अधिक तड़ें पैदा करने का प्रयत्न किया होता, जातिवालों को छेड़ा-चिढ़ाया होता, तो वे अवश्य मेरा विरोध करते और मैं विलायत से लौटते ही उदासीन और अलिप्त रहने के स्थान पर खटपट के फंदे में फंस जाता और केवल मिथ्यात्व का पोषण करनेवाला बन जाता।

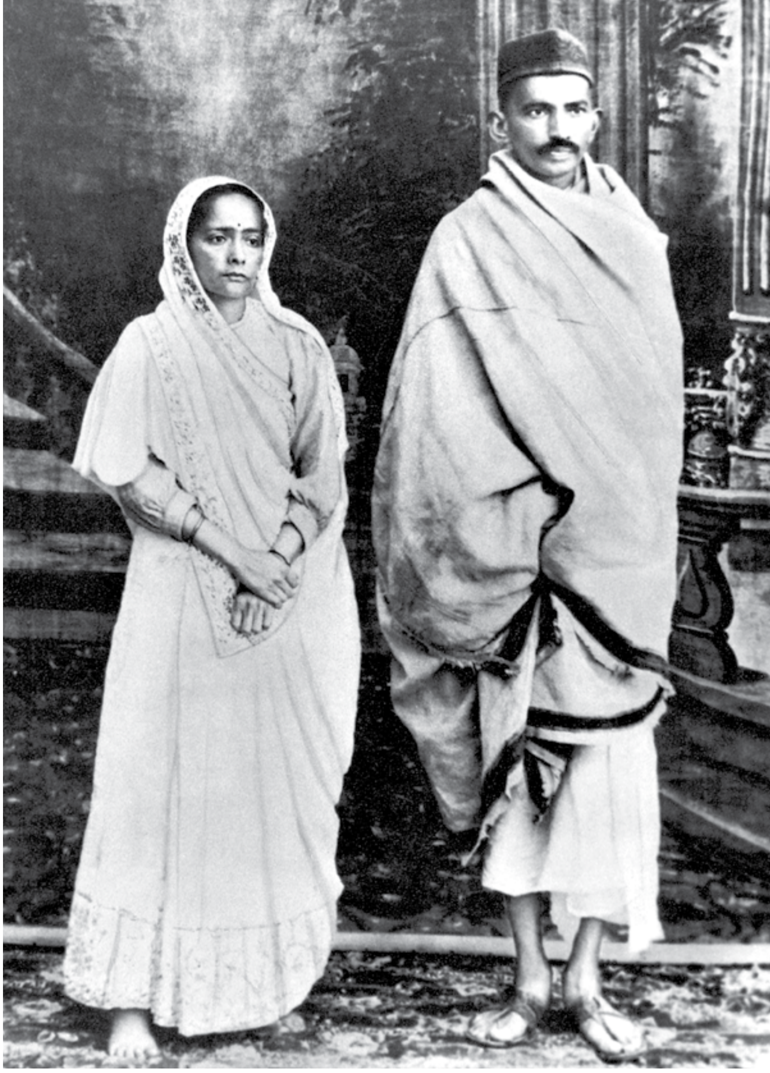

कस्तूरबा और महात्मा गाँधी, १९१५

पत्नी के साथ मेरा संबंध अब भी जैसा मैं चाहता था वैसा बना नहीं था। विलायत जाकर भी मैं अपने ईर्ष्यालु स्वभाव को छोड़ नहीं पाया था। हर बात में मेरा छिद्रान्वेषण और मेरा संशय वैसा ही बना रहा। इससे मैं अपनी मनोकामनाएं पूरी न कर सका। पत्नी को अक्षर-ज्ञान तो होना ही चाहिए। मैंने सोचा था कि यह काम मैं स्वयं करूंगा, पर मेरी विषयासक्ति ने मुझे यह काम करने ही न दिया और अपनी इस कमजोरी का गुस्सा मैंने पत्नी पर उतारा। एक समय तो ऐसा भी आया जब मैंने उसे उसके मायके ही भेज दिया और अतिशय कष्ट देने के बाद ही फिर से अपने साथ रखना स्वीकार किया। बाद में मैंने अनुभव किया कि इसमें मेरी नादानी के सिवा और कुछ नहीं था।

बच्चों की शिक्षा के विषय में भी मैं सुधार करना चाहता था। बड़े भाई के बालक थे और मैं भी एक लड़का छोड़ गया था, जो अब चार साल का हो रहा था। मैंने सोचा था कि इन बालकों से कसरत कराऊंगा, इन्हें मजबूत बनाऊंगा और उन्हें अपने सहवास में रखूंगा। इसमें भाई की सहानुभूति थी। इसमें मैं थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त कर सका था। बच्चों का साथ मुझे बहुत रुचा और उनसे हँसी-मजाक करने की मेरी आदत अब तक बनी हुई है। तभी से मेरा यह विचार बना है कि मैं बच्चों के शिक्षक का काम अच्छी तरह कर सकता हूँ।

खाने-पीने में भी सुधार करने की आवश्यकता स्पष्ट थी। घर में चाय-कॉफी को जगह मिल चुकी थी। बड़े भाई ने सोचा कि मेरे विलायत से घर लौटने के पहले घर में विलायत की कुछ हवा तो दाखिल हो ही जानी चाहिए। इसलिए चीनी मिट्टी के बरतन, चाय आदि जो चीजें पहले घर में केवल दवा के रूप में और 'सभ्य' मेहमानों के लिए काम आती थीं, वे अब सबके लिए बरती जाने लगीं। ऐसे वातावरण में मैं अपने 'सुधार'

लेकर पहुँचा। ओटमील पॉरिज (जई की लपसी) को घर में जगह मिली, चाय-कॉफी के बदले कोको शुरू हुआ। पर यह परिवर्तन तो नाममात्र को ही था, चाय-कॉफी के साथ कोको और बढ़ गया। बूट-मोजे घर में घुस ही चुके थे। मैंने कोट-पतलून से घर को पुनीत किया।

इस तरह खर्च बढ़ा। नवीनतएं बढ़ी। घर पर सफेद हाथी बंध गया। पर यह खर्च लाया कहाँ से जाय? राजकोट में तुरंत धंधा शुरु करता हूँ, तो हँसी होती है। मेरे पास ज्ञान तो इतना भी न था कि राजकोट में पास हुए वकील के मुकाबले में खड़ा हो सकूं, तिस पर फीस उससे दस गुनी लेने का दावा! कौन मूर्ख मुवक्किल मुझे काम देता? अथवा कोई ऐसा मूर्ख मिल भी जाये, तो क्या मैं अपने अज्ञान में घृष्टता और विश्वासघातकी वृद्धि करके अपने ऊपर संसार का ऋण ऊपर संचार का ऋण और बढ़ा लूं?

मित्रों की सलाह यह रही कि मुझे कुछ समय के लिए बम्बई आकर हाईकोर्ट की वकालत का अनुभव प्राप्त करना और हिन्दुस्तान के कानून का अध्ययन करना चाहिए और कोई मुकदमा मिल सके तो उसके लिए कोशिश करनी चाहिए। मैं बम्बई के लिए रवाना हुआ।

वहाँ घर बसाया। रसोइया रखा। रसोइया मेरे जैसा ही था। ब्राह्मण था। मैंने उसे नौकर की तरह कभी रखा ही नहीं। यह ब्राह्मण नहाता था, पर धोता नहीं था। उसकी धोती मैली, जनेऊ मैला। शास्त्र के अभ्यास से उसे कोई सरोकार नहीं। लेकिन अधिक अच्छा रसोइया कहाँ से लाता?

''क्यों रविशंकर (उसका नाम रविशंकर था), तुम रसोई बनाना तो जानते नहीं, पर संध्या आदि का क्या हाल है?''

''क्या बताऊँ भाईसाहब, हल मेरा संध्या-तर्पण है और कुदाल खटकरम है। अपने राम तो ऐसे ही ब्राम्हण हैं। कोई आप जैसा निबाह ले तो निभ जायें, नहीं तो आखिर खेती तो अपनी है ही।''

मैं समझ गया। मुझे रविशंकर का शिक्षक बनना होगा। समय मेरे पास बहुत था। आधी रसोई रविशंकर बनाता और आधी मैं। मैंने विलायत की अन्नाहारवाली खुराक के प्रयोग यहाँ शुरू किए। एक स्टोव खरीदा। मैं स्वयं तो पंक्ति-भेद को मानता ही न था। रविशंकर को भी उसका आग्रह न था। इसलिए हमारी पटरी ठिक जम गई। शर्त या मुसीबत, जो कहो सो यह थी कि रविशंकर ने मैल से नाता तोड़ने और रसोई साफ रखनें की सौगंध ले रखी थी!

लेकिन मैं चार-पांच महिने से अधिक बम्बई में रह ही न सकता था, क्योंकि खर्च बढ़ता जाता था और आमदनी कुछ भी न थी।

इस तरह मैंने संसार में प्रवेश किया। बारिस्टरी मुझे अखरने लगी। आडम्बर अधिक, कुशलता कम। जवाबदारी का खयाल मुझे दबोच रहा था।

–'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.७७-७९, क्रमश:

विचारों की शुचिता

केवल मुख से रामनाम कहने का उपचार से कोई संबंध नहीं है। अगर मैं ठिक समझता हूँ तो, जैसा कि इन मित्र ने कहा है, विश्वास-चिकित्सा मात्र एक धोखे की चीज है और उससे जीवंत ईश्वर के जीवंत नाम का उपहास होता है। जीवंत ईश्वर कोरी कल्पना नहीं है। पर हाँ, वह ह्रदय से आना चाहिए।

ईश्वर में सचेतन विश्वास और उसके नियम के ज्ञान से, और किसी मदद के बिना, पूर्ण उपचार संभव है। वह नियम यह है कि शरीर के पूर्ण स्वास्थ्य के लिए मन की पूर्णता आवश्यक है। मन की पूर्णता ह्रदय की पूर्णता से आती है - यहाँ ह्रदय से आशय डाक्टर के स्टेथेस्कोप से सुनाई देने वाला ह्रदय नहीं बल्कि वह ह्रदय है जहाँ ईश्वर विराजता है। कहते हैं कि ह्रदय में ईश्वर का वास होने पर मन में कोई अपवित्र या निरर्थक बात आ ही नहीं सकती।

विचारों की शुचिता हो तो बीमारी आ ही नहीं सकती। इस स्थिति को प्राप्त करना कठिन तो है, पर इस नियम को समझना ही स्वास्थ्य की दिशा में पहला कदम उठाना है। दूसरा कदम तदनुसार प्रयास करना है। मनुष्य के जीवन में यह आमूल संशोधन होने के साथ-साथ स्वभावतया उन सभी प्राकृतिक नियमों का पालन भी शुरु हो जाता है जिनकी खोज अभी तक मनुष्य ने की है। यह नहीं हो सकता कि मनुष्य उनके साथ खिलवाड़ करे और साथ ही, शुद्ध ह्रदय होने का दावा भी करे।

यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि ह्रदय निर्मल हो जाए तो रामनाम की जरुरत नहीं है। बस, यह है कि मुझे रामनाम के अलावा ह्रदय को निर्मल करने का कोई और उपाय ज्ञात नहीं है। विश्व के सभी प्राचीन मनीषियों ने इसी उपाय का अवलंब लिया है। वे सब ईश्वर के प्रिय भक्त थे, कोई अंधविश्वासी या धूर्त नहीं थे।

आध्यात्मिक बल मनुष्य की सेवा के लिए उपलब्ध अन्य बलों की तरह ही है। इस तथ्य के अलावा कि यह बल युगों से शारीरिक बीमारियाँ के लिए कमोवेश सफलता के साथ इस्तेमाल किया जाता रहा है, अगर यह शारीरिक बीमारियों के इलाज के लिए सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया जा सकता है, तो ऐसा न करना बुनियादी तौर पर गलत होगा। क्योंकि मनुष्य पदार्थ और आत्मा, दोनों है और ये दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

अगर आप इस बात का विचार किए बिना कि कुनैन लाखों लोगों को नसीब नहीं है, उसका सेवन करके मलेरिया से छुटकारा पा लेते हैं तो फिर अपने अंदर मौजूद उपचार का इस्तेमाल करने से इसलिए इंकार क्यों करते हैं कि लाखों लोग अज्ञानतावश उसका प्रयोग नहीं करते?

क्या आप अपने को सिर्फ इसलिए साफ-सुथरा नहीं रखेंगे कि लाखों लोग अज्ञानता या सिर्फ हठ के कारण, अपनी सफाई नहीं करते? यदि आप मानवप्रेम की झूठी धारणा के वशीभूत होकर अपनी सफाई नहीं करेंगे तो गंदगी और बीमारी की वजह से आप उन्हीं लाखों भाइयों की सेवा से वंचित हो जाएंगे। यह जरूर है कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य तथा शुचिता से इंकार करना शारीरिक स्वस्थता तथा शुचिता से इंकार करने से ज्यादा बुरा है।

रामनाम लेना और व्यवहार में रावण के रास्ते पर चलना निरर्थक से भी गया-बीता है। यह केवल पाखंड है। आदमी स्वयं को या दुनिया को धोखा दे सकता है, पर उस सर्वशक्तिमान को धोखा नहीं दे सकता।

– 'महात्मा गाँधी के विचार' से साभार, पृष्ठ क्र. ७७-७८

कस्तूरबा जीवन–झांकी: समय के दायरे में

बा–बापू १५० के अवसर पर फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य डॉ. सुदर्शन आयंगार के द्वारा कस्तूरबा की जीवन–झांकी तैयार की गई है। इस प्रयास में तीन अधिकृत दस्तावेजों का आधार लिया गया है। उनमें गाँधीजी की दिनवारी, संपूर्ण गाँधी वाड्मय तथा अरुण गाँधी द्वारा लिखी गई Kasturba - A Life का समावेश होता है। उपरोक्त स्रोतों का उपयोग कर हमने बा की दिनवारी को हिंदी में लोगों के बीच रखने का प्रयास किया है। हम 'खोज गाँधीजी की' में कस्तूरबा की दिनवारी को क्रमशः प्रस्तुत कर रहे है।
– संपादक

१९२६ – के अरसे में मणिलाल फातिमा नामक महिला के प्रेम में पडे। बापु को पता चला और उन्होंने ३ अप्रैल १९२६ को मणीलाल को एक खत लिखा और इस संबंध को खत्म करने के लिए कहा। बा को लगा मणिलाल की शादी होनी चाहिए। महाराष्ट्र के अकोला कस्बे में एक परिवार के साथ आना–जाना हुआ था। बा वहाँ जनवरी १९२७ को पहुँची और मशरूवाला परिवार की मझली बेटी सुशीला के साथ मणिलाल की शादी तय कर दी। यह शादी अकोला में ६ मार्च १९२७ में हो गई और बा पहली बार दुल्हे की माता का हक निभा पायी।

१९२९ – तक का बहुत सारा समय आश्रम में ही बीता। दिसंबर १९२९ में मणिलाल अपनी पत्नी सुशीला और एक बरस की पुत्री सीता के साथ साबरमती आश्रम आ पहुंचे और बा की खुशी का ठिकाना न था।

१९३० – फरवरी महीने के अंत से ही पूरा आश्रम नमक सत्याग्रह के लिए दांडीकूच की तैयारी में लगा हुआ था। बा कैसे पीछे रह सकती थी? दांडीकूच की शुरूआत के रोज़ बा भी चार बजे ही उठ गई और बापू व सत्याग्रहियों की कूच विदाई के लिए तैयार हुई। मणिलाल भी कूच के एक सिपाही थे। पत्नी सुशीला के लिए मुश्किल समय था, उसे रुलाई आ गई। बा ने उसके सर पर हाथ रख कर कहा, 'क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारा पति तुम्हारी रोनी सूरत को याद करता रहे?' फिर वे महिलाओं की ओर मुडी और कहा, 'देखो, हम सभी वीर सिपाही की पत्नियां, बहन और मां हैं, हमें उन्हें हिम्मत देनी चाहिए तभी वे हिम्मत से आगे बढेंगे।' बा ने आगे बढ कर बापु को तिलक लगाया और विदाई दी। सुशीला को बा के चेहरे पर एक निडर दृढता दिखाई दी थी। बा प्रीतमनगर तक बापू और टुकडी के साथ चली और फिर आश्रम वापस आई। दांडी यात्रा के दौरान बा दो बार बापू से मिलने गईं।

९ अप्रैल को छोटा बेटा देवदास गिरफ्तार हुआ और धरासणा कांड में मणिलाल ने बहादुरीपूर्वक सर पर डंडा झेलकर गिरफ्तारी दी, बापू को ५ मई के दिन कराडी से गिरफ्तार किए गए। रामदास भी गिरफ्तार हुए। दक्षिण अफ्रीका के इतने सालों बाद बा ने फिर अपने पति और तीन बेटों को देश की खातिर जेल जाते देखा। हफ्तों बाद जब बा और सुशीला जेल में कैदियों से मिलने पहुंचे तो सुशीला तो अपना दुःख और रुलाई काबू में न रख पाई परंतु बा एकदम शांति से बेटों से हालचाल पूछ रही थीं।

१९३१ – बापू ने कहा था कि औरतें अहिंसक सत्याग्रह के लिए अधिक योग्य हैं। आने वाले छ सात महीनों में बा ने औरतों के साथ मिलकर जम कर पिकेटिंग की, कई इलाकों में खूब घूमी और औरतों को

कस्तूरबा गाँधी अपने पोते कहानदास (काना) के साथ, सेवाग्राम १९३९

सत्याग्रह के लिए जगाया और अनन्य नेतृत्व प्रदान किया। रामदास और मणिलाल से साबरमती जेल में मिलने के कई महीनों बाद अपने छोटे बेटे देवदास को पंजाब के एक शहर की जेल में मिलने पहुंची और स्टेशन पर हज़ारों की भीड जमा थी। बा ने पूछा तो जवाब मिला कि वे सब इस महान औरत यानि बा को देखने और अभिनंदन करने आये थे और जेल तक जुलूस के स्वरूप में बा को ले जाना चाहते थे। इसी साल में दक्षिण अफ्रीका के औरतों ने बा के काम को बढ़ावा देने के लिए बा के नाम से चंदा इकठ्ठा किया और २५ पाऊंड की रकम बा के नाम भेजी।

मई १९३१ में गांधीजी के साथ शिमला गईं। १७ मई को वाईसरिन लेडी विलिंगडन ने बा को मिलने बुलाया वे गईं और बहन अनसूया साराबाई ने दुभाषिये का काम किया। लेडी विलिंगडन खादी का कपडा लेना चाह रही थी, बा ने कहा वे अवश्य भेजेंगी। लेडी ने यह भी कहा कि हिन्दुस्तान के वासियों से मिल कर उन्हें करीब से जानना चाहती हैं, बा ने कहा लेडी का विचार नेक है और ऐसा करने में बा जो हो सकेगा वह मदद करेंगी। शिमला की चर्चाओं के आधार पर ही बापू और अन्यों के साथ दूसरी गोलमेजी परिषद का आयोजन हुआ परंतु बा ने बापू के साथ जाने से इंकार किया और कहा था कि उन्हें देश में रहकर ही काम करना है।

१९३२ – दूसरी गोलमेजी परिषद असफल रही। बापू अगस्त के अंत में गये थे और २८ दिसंबर १९३१ वापस लौटे, ४ जनवरी १९३२ के दिन मुंबई से गिरफ्तार हुए, बा हाजिर थीं, कहा, बोलचाल में गलती हुई तो बापू बख्शें और विदाई दी। साबरमती आश्रम लौटी ही थी की बा को भी गिरफ्तार कर लिया गया और १५ जनवरी को ६ सप्ताह की सजा सुनाई गई और उन्हें साबरमती जेल में बंद किया गया।

समय पर बा की रिहाई हुई और वे बापू से जेल में मिलना चाहती थी पर बापू ने ही किसीसे भी मिलने से इनकार कर दिया था। और जब उन्होंने मिलना शुरू किया तो १५ मार्च १९३२ को बा की फिर गिरफ्तारी हुई और फिर ६ महीने की सज़ा हुई और जुर्माना हुआ जिसे न भरने पर डेढ महीने की और सज़ा सुनाई गई और बा फिर से साबरमती जेल में कैद हो गईं। बा जिस तरह से औरतों के साथ रह कर आंदोलन की गति बढा रही थी अंगेज़ सरकार उन्हें बडा खतरा मान रही थी।

२० सितंबर १९३२ के रोज़ बापू ने यरवडा जेल से ही दलितों (तब हरिजनों) के लिए बनी अंग्रेज़ सरकार की नीति के विरोध में आमरण अनशन किया। २२ सितंबर को बा को साबरमती जेल से निकाल कर यरवडा जेल में बापू के साथ रखा गया। २६ सितंबर को बा के हाथों फलों का रस लेकर बापू ने उपवास तोडा।

क्रमशः

आज की समाज रचना

प्रत्येक कार्य के निष्पादन की समय सीमा निर्धारित हो

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'पुनर्विचार हेतु सहायक पार्श्वभूमि' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

डॉ. भवरलालजी जैन

अत्याधिक गोपनीयता के कारण अनुचित,अव्यवहारिक और असभ्य व्यवहार का जन्म होता हुआ प्रतीत होता है। गोपनीयता की आड़ में फाइल गायब करके अनेक घोटाले और रहस्यमय प्रकरणों को अंदर ही अंदर दबाने के कारनामें होते रहते हैं। इन्हीं प्रावधानों के कारण कई षड्यंत्र रचे गए, गुप्त मंत्रणाए चलीं। इतना ही नहीं शायद साजिशें भी रची गई और उनका कभी भी भंडाफोड नहीं हुआ। ऐसी गूढ़ और रहस्यमय स्थितियों में ही आज की राजनीति का सच्चा पोषण या लालन-पालन होता रहता हैं। संबंधित अधिकारियों या जन प्रतिनिधियों को मुश्किल में डालने वाली कोई बात हो तो उसे दबाने, निष्प्रभावी करने और छिपाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाया जाता है। इस तरह के प्रकरणों से विधानसभा या विधानपरिषद को दूर रखा जाता है। इसे अंधेरे में रखने से अनेक मुश्किल प्रश्नों से मुक्ति मिल जाती है। गलत निर्णय, अनुचित कृपा, गैरकानूनी अनुमति आदि बातों पर पर्दा डालने के लिए ही इन प्रावधानों का उपयोग किया जाता है। जिन्हें सत्य-निष्ठा का जीवन जीना होता है, ऐसे अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों का मुँह बंद करने के ऐसे कानूनी प्रावधानों का दुरूपयोग किया जाता है।

स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार तीव्र गति से बढ़ा है। जिसका एक कारण प्रशासनिक कार्यों में आवश्यकता से अधिक गोपनीयता बरतना। वस्तुत: गोपनीयता की सार्थकता ही अनौचित्यपूर्ण है। गोपनीयता के कारण ही छल-कपट का जन्म होता है। अत: गोपनीयता का प्रशासन में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। किंतु आज की सामाजिक स्थिति और उसका स्वरूप देखते हुए जान्सन के स्पष्ट विचारों का स्मरण होता है,उनके अनुसार जहाँ गोपनीयता या रहस्य का प्रारंभ हुआ, वह भ्रष्टाचार या चालबाज़ी अधिक दूर नहीं होता है।

कुछ समय पश्चात अधिकारियों का गोपनीयता के प्रति मोह इतना बढ़ जाता है कि उसका उपयोग वे अकारण ही करते रहते हैं। गोपनीयता के लिए गोपनीय रखना उनका स्वभाव बन जाता है। उसके द्वारा वे नागरिक अधिकारों को अपने पाँवों तले रौंदते हैं। आम आदमी को ईमानदारी या खुले दिल से किसी भी मामले की पूरी जानकारी नहीं देते हैं। गोपनीयता के कारण अधिकारियों में पारदर्शिता, स्पष्टता, निर्भीकता रंचमात्र भी नहीं रहती है। नागरिकों के साहस, लगन, निग्रह आदि गुणों को गोपनीयता की आड़ में कुचले जाने का अनुभव कई बार होते रहते हैं।

सारांशतः अत्यधिक सुरक्षा व्यवस्था और गोपनीयता नागरिकों के हितों की रक्षा नहीं करते हैं, उनका चरित्र निर्माण भी नहीं होने देते हैं। प्रशासन का ढाँचा भी लुंज-पुंज कर डालते हैं। इतना ही नहीं, वे समाज और सरकार दोनों की आत्माओं के दमन और अध:पतन के लिए उत्तरदायी सिद्ध होते हैं।

सरकार शब्द से हमारे सामने कभी भी खत्म न होने वाला अध्याय एवं अति प्रचंड यंत्रणा का चित्र उभर कर आता है। इसीलिए आम आदमी सरकारी काम-काज में धीमापन, निष्क्रियता और शिथिलता मान कर चलता है। विलंब सरकारी कामकाज का अभिन्न अंग बन गया है। इसका प्रमुख कारण सुरक्षा का घेरा और अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन न करने वाले सरकार में बैठे अधिकारी वर्ग की प्रवृत्ति है। विनोद में आई.ए.एस. की व्याख्या आई एम सेफ किया जाता है। समय के प्रवाह में अपने लाभ के लिए टाल-मटोल करना, विलंब करना, जान-बूझ कर रुकावटें पैदा करना आदि बातें सामान्य सी हो गई हैं। परिणामस्वरूप अधिकांश प्रस्ताव अकारण ही अटक जाते हैं या आगे ठेल दिए जाते हैं। छोटे-मोटे काम-काज भी किसी न किसी कारण से लंबित रखे जाते है। सरकारी कार्यालयों में टाल-मटोल करना आज राजकीय नैतिक धर्म बन गया है। एक कवि की सटीक टिप्पणी इस प्रकार है-जो उलझ कर रह गई, फाईलों के जालों में। गाँव तक वो रोशनी, पहुँचेगी कितने सालों में।

सरकारी काम-काज में पग-पग पर दिखाई देने वाले भ्रष्टाचार की जड़ से विलंब का जुड़वाँ भाई जैसा नाता है। एक ओर समाज के प्रत्येक वर्ग में उतावलापन या बेचैनी दिखाई देती है; सभी के काम शीघ्रतापूर्वक सम्पन्न होने चाहिए, ऐसी प्रबल प्रवृत्ति सर्वत्र दिखाई देती है और दूसरी ओर सुनियोजित तरीके से कार्यों को विलंबित करने वाला सरकारी अधिकारी दिखाई देता है। दोनों की संयुक्त प्रवृत्ति से भ्रष्टाचार का जन्म होता है। परिणामस्वरूप यदि अपना कार्य शीघ्र करवाना हो तो सुविधा-शुल्क अवश्य देना पड़ेगा, ऐसी मानसिकता व्याप्त हो गई है।

यदि जनता के प्रत्येक कार्य के निष्पादन की समय सीमा निर्धारित हो जाए, तो विलम्ब और भ्रष्टाचार के भस्मासुरों को नियंत्रित किया जा सकता है। नियत समय सीमा में कार्य का निष्पादन न होने या शुल्क जमा होने के पश्चात भी नियत समय सीमा में भुगतान न होने पर संबंधित अधिकारियों को उत्तरदायी ठहरा कर उनके वेतन से पीड़ित व्यक्ति के नुकसान भरपाई की जाए तो चमत्कारी परीणाम प्राप्त होगा। साथ ही, यदि कोई अधिकारी अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर किसी नागरिक से मनमाना जुर्माना सजा सुनाई हो और वह जाँच में सिद्ध हो जाए तो ऐसे अधिकारी को उसी अनुपात में कठोर सजा दी जानी चाहिए। ऐसे प्रावधान की व्यवस्था कानून एवं अधिकारियों के नियुक्ति-पत्र में होनी चाहिए।

क्रमशः

आर्थिक स्वावलंबन की ओर एक कदम... मशरूम प्रशिक्षण के दौरान खर्ची गाँव की महिलाएं

महिलाओं के नेतृत्व में मशरूम खेती का आरंभ

गाँव में दिन ब दिन आजीविका के मौके नहीं के बराबर होते जा रहे हैं। उसका एक प्रमुख कारण मार्गदर्शन और आत्मविश्वास की कमी भी हैं। महिलाओं के संदर्भ में यह दोनों विषय कोसो दुर दिखाई देते हैं। लेकिन अब इस स्थिति में परिवर्तन का आरंभ हो चुका है। बा-बापू १५० ग्राम विकास कार्यक्रम के तहत महिलाओं को स्वावलंबन कि दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

खर्ची खुर्द और बुद्रुक गाँव में २५ महिला गुट स्थापित हैं। किंतु इस गुटों में नियमित बचत के अलावा खास कोई कार्य नहीं हो रहा था। वर्ष २००० से स्थापित यह सभी गुट उचित मार्गदर्शन के अभाव से उद्यमिता निर्माण में सक्रीय नहीं थे।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के ग्रामीण कार्यकर्ता चंद्रकांत चौधरी और प्रशांत सुर्यवंशी ने इन महिलाओं के साथ नियमित संपर्क व चर्चा करते थे। उस दौरान छोटे -छोटे आसान उद्योगों के बारें मे जानकारी साझा करते थे, साथ-साथ उद्योग शुरु करने के लिए महिलाओं में आत्मविश्वास दृढ करने के अथक प्रयास भी करते थे। केवल मजदुरी और घर के कामकाज तक सीमित न रहने का फैसला गुट के १४ महिलाओं ने किया और उद्योजकता की ओर बढने का प्रयास हुआ। संगठित प्रयासों से कार्य करने के लिए क्रांती महिला बचत गुट की महिलाओं ने अपनी अभिलाषा हमारे कार्यकर्ताओं के सामने प्रस्तुत की।

२५ फरवरी २०१९ के दिन महिलाओं ने करंज गाँव में स्थित राधेय मशरूम फार्म से मशरूम खेती की जानकारी प्राप्त की। ७ मार्च २०१९ के दिन फाउण्डेशन के डेविड जेबराज के मार्गदर्शन में मशरूम खेती का प्रयोग आरंभ किया। इस कार्य में महिलाओंने उचित स्थान का चुनाव, मशरूम के लिए आवश्यक साहित्य का संग्रह, मशरूम के बिजारोपण, उचित वातावरण में सातत्य के साथ देखभाल रखने का कार्य तथा उत्पादन पश्चात विपणन व्यवस्था के लिए महिलाओं में श्रम का विभाजन तथा नियोजन किया गया।

लोक भागीदारी आधारित निर्धार से भविष्य में मशरूम से निर्मित पौष्टिक पदार्थो का निर्माण करने की दिशा में महिलाओं का सार्थक प्रयास दिखाई दे रहा हैं। फाउण्डेशन के प्रयास से तथा क्रांति महिला बचत गुट की महिलाओं के सामर्थ्य से आस पास के गाँवों के लिए नई मिसाल स्थापित हो रही है। ♦♦♦

अग्निशमन यंत्र का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए फाउण्डेशन के सहकारी

गाँधी तीर्थ पर आनेवाले मुलाकातियों की सुरक्षा के लिए हम सज्ज हैं

फाउण्डेशन में कई आगंतुक आते हैं, आने वाले सभी की सुरक्षा के संदर्भ में हमारे कार्यकर्ताओं को ISO 14001,18001 तथा 45001 के अंतर्गत सुरक्षा व्यवस्थापन के आधिन समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यहाँ सेवा देने वाले सभी बहने तथा भाईयों को सुरक्षा के उपकरणों का प्रयोग करने की विधि पता होनी चाहिए, ताकी आपातकालीन स्थिति में परिस्थिति को नियंत्रित कर सके।

इस उद्देश्य से फाउण्डेशन के परिसर में अग्निशमन यंत्रों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए जैन इरिगेशन के सुरक्षा विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे। ♦♦♦

टाकरखेड़ा में युवा शक्ति द्वारा मैदान की स्वच्छता...

दिन प्रति दिन हमारी जीवनशैली एक अलग आकार धारण कर रही है। आधुनिकता की इस दौड़ में कई तरह के शारीरिक व्यायाम के साथ हमारा नाता कम होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में विद्यालय में भी खेल के छात्रों की रुची को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तरह के प्रयासों को साकार करना स्वाभाविक बन जाता हैं।

फाउण्डेशन द्वारा टाकरखेडा गाँव में गाँव के बच्चों एवं युवाओं के लिए खेल का मैदान का अभाव था। गाँव में जगह तो थी पर उसे ठीक तरह से तैयार करने की आवश्यकता थी। फाउण्डेशन ने तकनीकी साधन के योगदान से तथा टाकरखेड़ा गाँव की लोक भागीदारी प्रयास से यह संभव हो पाया है। वॉलीबॉल, कबड्डी, क्रिकेट, हैंडबॉल आदि मैदानी खेलों के लिए उपयोग में आने वाला यह मैदान कई खेलाड़ियों के सपनों को सार्थक करने का घटक बनेगा। इस मैदान के उद्धाटन कार्यक्रम में फाउण्डेशन के

लोक भागीदारी आधारित निर्माण कार्य में युवाएं सम्मिलित हुए

बा-बापू १५० के समन्वयक डेविड जेबराज, विनोद रापतवार तथा राहुल लांबोले ने योगदान प्रदान किया। ♦♦♦

सिर्फ एक दिन ही नहीं, बल्कि हर दिन नारी दिवस मनाए

वैजापूर, खर्ची खुर्द गाँवों में महिला दिन के अवसर पर कार्यक्रम

फाउण्डेशन ने अपनी हर एक गतिविधियों में महिला सशक्तिकरण को विशेष स्थान दिया है, बा-बापू १५० के अंतर्गत आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए विशेष प्रयास भी किए जा रहे हैं। विश्व महिला दिन के अवसर पर निम्न रूप से कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

वैजापूर: जलगाँव जिला के चोपड़ा तहसील का आदिवासी विस्तार में स्थित एक गाँव वैजापूर, में विश्व महिला दिन के अवसर पर एक विशेष महिला सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा में अहिल्याबाई होलकर की प्रतिमा को सूती माला पहनाकर उनके जीवन की गाथा का स्मरण किया। इस विशेष दिन के अवसर पर सामाजिक उत्थान में महिलाओं की भूमिका के विषय पर फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सागर चौधरी ने अपनी बात प्रस्तुत की। इस अवसर पर सुधीर पाटील ने संगठन की भावना के आधार पर समूह को मजबूत बनाने के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण सुझावों को साझा किया। उपस्थित आशा कार्यकर्ता वंदना पाटील ने महिला आरोग्य और स्वच्छता विषय पर अपनी बात प्रस्तुत की। आयोजित कार्यक्रम का सूत्र-संचालन फाउण्डेशन में कार्यरत डिप्लोमा की छात्रा पद्मावती ने किया। इस कार्यक्रम में वैजापूर गाँव की महिलाएं, ग्राम पंचायत के सदस्यों तथा फाउण्डेशन के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

२१वीं शताब्दी में महिलाएं नया इतिहास रच रही हैं - अलका कोली

खर्ची खुर्द: छोटे से गाँव खर्ची में महिलाओं के इक्कीस बचत गुट कार्यरत हैं। इस गाँव के सभी गुट की १५० महिलाएं साथ मिलकर विश्व महिला दिन के अवसर पर 'बचत गुट का महत्त्व' कार्यक्रम को संपन्न किया। इस कार्यक्रम में अलका कोली ने तथा सीमा महाजन ने उपस्थित रहकर बचत समूह का महत्त्व विषयक कई बातें साझा की गई।

गाँधी तीर्थ: विश्व महिला दिन के अंतर्गत गाँधी तीर्थ पर आयोजित प्रार्थना में फाउण्डेशन के सहकारियों ने इस विशेष दिन पर अपने विचार साझा किए।

विद्या क्रिष्नमूर्ती ने महिलाओं के योगदान को विभिन्न स्वरूप में दर्शाते हुए कहा कि आज भी हमारे राष्ट्र में लैंगिक मुद्दों को अलगाव के आधार पर देखा जा रहा हैं, उसे संबोधित करने की आवश्यकता है।

प्रो. गीता धरमपाल ने कहा कि नारी शक्ति के योगदान से राष्ट्र निर्माण की बागडोर संभालने का कार्य आदि काल से चला आ रहा है, उनमें कस्तूरबा का भी एक नाम है। इस साल बा और बापू की १५०वीं जन्म जयंती है, इस अवसर पर ग्रामीण महिलाओं के हुनर को पहचान कर उसे सही मौका देने से वे भी अपने समुदाय को उन्नत कर सकती है। हमारे देहातों में आज भी कितनी महिलाएं है जिसमें कस्तूरबा का दर्शन होता है।

डॉ. जॉन चेल्लदुरै ने कहा कि स्त्री सशक्तिकरण का कार्य स्त्रियों से अधिक पुरुष की जिम्मेदारी है। जैसे गाँधीजी ने कहा कि अस्पृश्यता निवारण का कार्य दलित से अधिक जो दलित नहीं है उन्हीं का है। समानता आधारित समाज का निर्माण करने में कार्य विभाजन की परंपरा को दूर कर नए सिले से गौर करने की आवश्यकता है।

अश्विन झाला ने कहा कि विश्व महिला दिन केवल एक दिन ही मनाने के लिए नहीं, बल्कि यह तो हर दिन मनाया जाना चाहिए। गाँधीजी के विचार से स्त्री की श्रद्धा के साथ पुरुष की श्रद्धा की कोई तुलना नहीं हो सकती। क्योंकि स्त्री और पुरुष में चरित्र की दृष्टि से स्त्री का आसन ज्यादा ऊँचा है, आज भी वह त्याग, मूक तपस्या, नम्रता, श्रद्धा और ज्ञान की मूर्ति है। ♦♦♦

विश्व जल दिवस के प्रयोजन पर निकाली गई भव्य जलयात्रा में सहभागी छात्र तथा नागरिक

'जल है तो कल है' – विश्व जल दिवस पर कार्यक्रम

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. भवरलाल एण्ड कांताबाई जैन फाउण्डेशन, मू. जे. महाविद्यालय के जलश्री विभाग तथा नीर फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में विश्व जल दिवस मनाया गया। इस विशेष दिन के अंतर्गत १६ से २२ मार्च के दौरान विविध कार्यक्रम द्वारा जनजागृती करने का प्रयास किया गया। इस सप्ताह का समापन २२ मार्च को जलयात्रा से किया गया। जलगाँव स्थित महात्मा गाँधी उद्यान से जलयात्रा निकाली गई। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक, दलीचंद ओसवाल ने जल कलश के पूजन के साथ यात्रा का आरंभ किया। इस यात्रा में जैन फार्म फ्रेश के संचालक अथांग जैन, कार्यकारी संचालक सुनील देशपांडे, फाउण्डेशन के अंबिका जैन, समन्वयक उदय महाजन समेत फाउण्डेशन के सहकारी समूह, जैन इरिगेशन के वरिष्ठ सहयोगी, अनुभूति विद्यालय के छात्र, पत्रकार बंधु तथा नगरजन सम्मिलित थे। महात्मा गाँधी उद्यान से आरंभ हुई इस यात्रा का भाऊ के उद्यान में पहुँचने के बाद समापन किया गया। समापन के दौरान दलिचंद ओसवाल ने उपस्थित सभी लोगों को पानी बचत की प्रतिज्ञा दिलाई। मार्गदर्शन करते हुए दलिचंद ओसवाल ने कहा कि, पानी बचाने की शुरुआत स्वयं से करें। दैनंदिन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए हम पानी का कितना फिजूल खर्च करते हैं इसका आत्मचिंतन होना चाहिए। 'पानी बूँद-बूँद, फसल भरपूर' यह भवरलालजी ने दी हुई विरासत को हमने संजोये रखना

यात्रा का विधिवत कलश पूजन करते हुए दलिचंद ओसवाल एवं गणमान्य

हैं, आवश्यक हो उतना ही पानी उपयोग में लाकर आगामी पीढ़ी को शुद्ध पानी देने के लिए मानवता को जागृत करें। जलयात्रा के समापन के अवसर पर शहर के ललित कला महाविद्यालय के छात्रों ने प्रबोधन पर प्रभावी पथनाट्य प्रस्तुत किया। तथा सेंट टेरेसा विद्यालय के छात्रों ने यात्रा के दौरान स्केटिंग कर जल के महत्त्व को दर्शाते विभिन्न फलक को प्रस्तुत किया। ♦♦♦

गिरणाई दूध उत्पादक मंडल के सदस्यों के साथ नई संभावना पर विचार-विमर्श

सहकारिता को बढ़ाने के लिए धानोरा में बैठक

धानोरा गाँव में फाउण्डेशन द्वारा विभिन्न गतिविधियों को अंजाम दिया जा रहा हैं। कृषि व पशुपालन से संबंधित प्रयास के द्वारा आर्थिक उन्नति की दिशा में आगे बढने में स्थानीय लोगों का प्रयास तथा फाउण्डेशन का मार्गदर्शन सार्थक साबित हो रहा है। फाउण्डेशन द्वारा धानोरा गाँव के किसानों के लिए सहकारिता का महत्त्व विषय पर एक कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में नाबार्ड बँक मैनेजर श्रीकांत झांबरे उपस्थित थे, श्रीमान झांबरे ने समूह कृषि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज कृषि को कम खर्च में अधिक उत्पादन वाली बनाने के लिए सामूहिक कृषि को बढ़ावा देने की नितांत आवश्यकता है। इस चर्चा में फाउण्डेशन के डेविड जेबराज, गिरणाई संयुक्त दूध उत्पादन परियोजना के पशु पालक तथा धानोरा गाँव के किसान उपस्थित थे। ♦♦♦

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा जीवननगर में गाँधी पूतले का अनावरण

नर्मदा नदी पर स्थित सरदार सरोवर से विस्थापित हुए लोगों का पुनर्वासन कर नंदुरबार के नजदीक जीवननगर नामक एक गाँव स्थापित किया गया है। महात्मा गाँधी की पूण्यतिथि पर फाउण्डेशन द्वारा अर्पित गाँधी पुतले का अनावरण जीवननगर स्थित जीवनशाला में डॉ. सुधीर तांबे के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर नर्मदा बचाव आंदोलन के प्रेरक मेधा पाटकर, डॉ. सुधीर तांबे, वरिष्ठ गाँधीवादी डॉ. सुगन बरंठ तथा फाउण्डेशन के सहकारी विनोद रापतवार उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. तांबे ने नर्मदा बचाव आंदोलन का महत्त्व तथा इस आंदोलन से महात्मा गाँधी की अहिंसक पद्धति ने लोगों में नया सामर्थ्य कैसे जगाया इस गाथा को प्रस्तुत किया। मेधा पाटकर ने कहा कि आज जातिवाद और हिंसक घटनाओं के दौर में महात्मा गाँधी के विचारों की आवश्यकता अधिक महसूस हो रही हैं। फाउण्डेशन के विनोद रापतवार ने सरोजिनी नायडू का जिक्र करते हुए मेधा पाटकर के कार्य की सराहना की।

महात्मा गाँधी के पुतले का अनावरण करते हुए डॉ. सुधीर तांबे, मेधा पाटकर, डॉ. सुगम बरंठ तथा विनोद रापतवार आदि

इस अवसर पर उपस्थित आदिवासी लोगों ने महात्मा गाँधी को आदरांजली अर्पण की। ♦♦♦

प्रवेश सूचना – शाश्वत ग्रामीण पुनर्निर्माण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संचालित उपरोक्त एक साल निवासीय अभ्यासक्रम के लिए प्रवेश प्रक्रिया जारी है। ग्राम विकास विषय में रुची रखनेवाले स्नातक कक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी अपना प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। कथित अभ्यासक्रम के लिए छात्रवृत्ति एवं मानधन की व्यवस्था की गई है। विस्तृत जानकारी के लिए http://www.gandhifoundation.net/academics_pg_diploma.htm पर माहितीपत्र एवं प्रवेशपत्र उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए मो. ०९४०४९५५२७२, ०९४२२७७६९३६ पर अथवा ई-मेल: info@gandhifoundation.net पर संपर्क करें।

स्मरणांजली

गाँधी चिंतन में समर्पित – दक्षा बहन पट्टणी

दक्षा बहन पट्टणी

सन् १९३८ में, गाँधी विचारों से गूंजता परिवार में दक्षा बहन पट्टणी का जन्म हुआ था। बचपन से ही गाँधीजी द्वारा प्रकाशित पत्रिका जैसे नवजीवन, हरिजन बंधु आदि का सहवास प्राप्त हुआ, घर से एक-दो लोग गाँधीजी के सत्याग्रह में भी जुड़े थे। इसके अलावा ''मुझे सांप और बिच्छु से डर तो लगता है पर जीवन जीने का अधिकार जितना मुझे है इतना उनको भी हैं।'' गाँधीजी के इस वाक्य ने दक्षा बहन के जीवन में गाँधी विचार की नींव को अधिक गहराई से स्थापित की। गाँधी विचार की लगनी ऐसी तो लगी की आगे की पढ़ाई में भी गाँधी विचार को खोजने लगे। नतीजा यह आया की पीएच. डी. का विषय भी गाँधी चिंतन बन गया।

अपने कार्य के माध्यम से गाँधी विचारों को जन समुदाय में विस्तारित करने के प्रयास में आपके द्वारा लिखित साहित्य ने एक अनोखा प्रभाव स्थापित किया है। उनके द्वारा रचित साहित्य केवल प्रभाव तक ही सीमित न रहकर प्रेरणादायी बन गया है। ऐसे प्रेरणा पथ के वासी दक्षा बहन पट्टणी अब हमारे बीच नहीं रहे। गाँधी के चिंतन की बात जब भी होगी, दक्षा बहन को निश्चित ही याद किया जाएगा।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का दक्षा बहन के साथ संक्षिप्त, किंतु गाढ़ परिचय रहा है। साहित्य संकलन व संरक्षण के उद्देश्य से फाउण्डेशन के समन्वयक उदय महाजन और प्रमोद जैन पहली बार भावनगर गए थे, उस वक्त दक्षा बहन के साथ पहला परिचय हुआ था। यह संक्षिप्त परिचय की नींव इतनी गहरी स्थापित हुई की बाद के दिनों में वैचारिक आदान-प्रदान होता रहा। खोज गाँधीजी की पत्रिका के माध्यम से सिलसिला आगे बढ़ता रहा, इस संदर्भ में कई बार बात भी होती रहती थी। जीवन के अंतिम पड़ाव में उन्होंने 'खोज गाँधीजी की' के लिए एक अभिमत प्रेषित किया। दक्षा बहन द्वारा लिखा हुआ यह आखिरी दस्तावेज है ऐसा भी कह सकते है, हमारे लिए तो यह उनका आशीर्वचन ही है। एक विरल व्यक्तित्व ऐसे दक्षा बहन के द्वारा स्थापित नींव को आगे ले जाना अब हम सब की जिम्मेदारी है। उनकी विचार सृष्टि के द्वारा वे हमारे बीच हमेशा जिंदा रहेंगे। ♦♦♦

'खोज गाँधीजी की' के बारे में दक्षा बहन का अभिमत

(दक्षा बहन ने आखिरी में अपनी प्रतिक्रिया लिख रखी थी, किंतु वह भेज नहीं सके। उनके जाने के बाद, उनकी भांजी कालींदिनी बहन ने हमें प्रेषित किया।)

यह पत्रिका एक विचार का प्रतिनिधित्व करती है और यह विचार गाँधी विचार है, इसमें एक शोध का प्रयत्न हैं। वास्तव में गाँधीजी क्या है इसकी खोज है, इसमें आते हुए लेख सचमुच वैज्ञानिक दृष्टि से लिखे हुए प्रामाणिक लेख हैं। अपने नाम को सार्थक करती हुई इस पत्रिका में गाँधी विचार से अतिरिक्त गाँधीजी के जीवन की अनेक बातों को जैसे गाँधीजी के बारे में अनेक भ्रांतियां फैली है, उनका स्पष्टीकरण करती हैं और वास्तव में घटनाएं क्या थी उसका दर्शन कराती हैं। इसलिए उसमें गाँधी विचार के उपरांत गाँधी जीवन का भी विचार है। विचार की गुणवत्ता और चिंतन की गहराई के कारण इस पत्रिका में उत्तम पत्रिका के गुण दिखाई दे रहे हैं।

दक्षा बहन पट्टणी, *भावनगर (गुजरात)*

डॉ. टी. करुणाकरण– एक गाँधीवादी चिंतक और ग्रामीण विकास विशेषज्ञ

*डॉ. टी. करुणाकरण अब हमारे बीच नहीं रहे, फाउण्डेशन के सलाहकार समिति के सदस्य थे। गाँधी विचाराधारित जीवनशैली को अपनाकर, ग्रामीण भारत के निर्माण में अपना जीवन अर्पित करने वाले डॉ. टी. करुणाकरण को फाउण्डेशन परिवार विनम्र भावांजली अर्पित करता है। फाउण्डेशन के साथ आपके संबंध तथा आपके द्वारा स्थापित विभिन्न संकल्पनाओं से सामाजिक उन्नति की गाथा को दर्शाता यह लेख प्रस्तुत करते हैं। – **संपादक***

एक गाँधीवादी चिंतक और ग्रामीण विकास विशेषज्ञ डॉ. टी. करुणाकरण जी सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर बेहद ही सक्रिय रहे हैं। १९६९ में मद्रास विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिग्री अर्जित की। इसके बाद करुणाकरण जी ने आईआईटी दिल्ली से १९७५ में गणितज्ञ प्रणाली सिद्धांत में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

डॉ करुणाकरण जी ने १९ साल तक विभिन्न अनुसंधान और अकादमिक पदों पर रहते हुए ४ आईआईटी में अपनी सेवाएं दी है। १९८७ से १९९७ तक ग्रामीण प्रौद्योगिकी केंद्र, गाँधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के निदेशक पद पर भी रहे है। वर्ष १९९७ से २००४ तक वह महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के कुलपति रहे हैं तो वहीं वर्ष २००४ से २००७ तक तमिलनाडु के गाँधीग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके है, उसके बाद वह महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट ऑफ़ रूरल इंडस्ट्रिलाइजेशन, वर्धा के निदेशक भी रहे है।

अपने जीवन के आखिरी पड़ाव में वे ग्रामीण युवाओं को विशेष रूप से किसानों के बच्चों के लिए जिन्होंने आत्महत्या की है उनके लिए – GRINDUS (कृषि आधारित उद्योग) जैसे नए मॉडल पर काम कर रहे थे।

व्यवहारिक शिक्षा का मॉडेल – एग्रिंडस

GRINDUS एक वैज्ञानिक और व्यावसायिक शिक्षा का स्वरूप है जिसके मूल में सामाजिक उद्योग का रूप पनप रहा है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि कृषि और उद्योग के संकलन से शाश्वतता की दिशा को सार्थक कर सकते है। कृषि उपज के मूल्य वर्धन के साथ औद्योगिक गतिविधियों से गाँवों की आर्थिक निरंतरता को निर्माण करने में मदद मिलेगी।

महाराष्ट्र में विदर्भ और मराठावाड़ के शुष्क क्षेत्रों में अपर्याप्त बारिश की वजह से कृषि में संकट की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। इस संकट के कारण कई किसान परिवार तबाह हो रहे हैं।

किसान आत्महत्या की स्थिति को निवारने के लिए डॉ. टी. करुणाकरण के द्वारा एग्रिंडस की स्थापना की गई है। एक साल के इस कार्यक्रम में युवाओं को सम्मिलित कर कृषि को मजबूत करने के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला जाता है। अद्वितीय कहने वाला आवासीय कार्यक्रम में छात्रों को यह अनुभव प्रदान किया जाता है कि कृषि एक तरह का उद्योग है, उसमें व्यवस्थापन को देखने की आवश्यकता है। एक साल के दौरान

सामुदायिक विकास में गाँधी दर्शन की संकल्पना का आदान-प्रदान करते दो दिग्गज पद्मश्री डॉ. भवरलालजी जैन तथा डॉ. टी. करुणाकरण

वैज्ञानिक ज्ञान आधारित कृषि पद्धति का निर्माण, योग्य विपणन व्यवस्था, उपज के साथ अतिरिक्त मूल्य जोड़ ने कि प्रक्रिया से रूबरू कराए जाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए युवा अपनी उपज को बाजार में बेच सकते हैं, इसलिए जब वे इस डिप्लोमा कार्यक्रम पूरा करते हैं उस वक्त उनके पास अपनी कमाई का हिस्सा भी होता है। ऐसी एक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत व्यवहारिक शिक्षा का मॉडेल 'एग्रिंडस' राष्ट्र के पास है, इसका पूरा श्रेय डॉ. करुणाकरण को जाता है।

फाउण्डेशन के साथ रिश्ता

उपयुक्त प्रोद्योगिकी और न्यायसंगत अर्थव्यवस्था के प्रतिपादक डॉ. टी. करुणाकरण, स्थापना से ही गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के साथ जुड़े हुए थे। वे एक शाश्वत विकास की धारा को सार्थक रूप में साकार करने वाले व्यक्ति थे, और हर तरह के सामाजिक अन्वेषण के लिए वैचारिक एवं व्यवहारिक कार्यप्रणाली तैयार करने में निपुण थे।

फाउण्डेशन की अकादमिक कौंसिल के सदस्य के रूप में, उन्होंने गाँधीवादी समाज कार्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा को क्षेत्र आधारित क्रियात्मक पाठ्यक्रम बनाया, बाद में शाश्वत ग्रामीण पुनर्निमाण में पीजी डिप्लोमा के पाठ्यक्रम गठन में अपना बहुमूल्य योगदान अर्पित किया।

इसी प्रकार, उन्होंने आगामी स्थापित होने वाली भवरलाल जैन जल विश्वविद्यालय के अंतर्गत आरंभ होनेवाले पाठ्यक्रम के लिए वैचारिक रूपरेखा तैयार करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जब भी वे जलगाँव आते थे, उस वक्त हमारे ग्रामीण विकास कार्यकर्ताओं को अवश्य मिलते थे और उनको विकास की आदर्श संरचना कैसी होनी चाहिए उस पर व्यवहारिक सलाह देते थे। आपकी हर एक मुलाकात हम सभी को एक नई प्रेरणा प्रदान करती थी।

एक अथक विकास करने वाला, बेबाक नेता, अपनी व्यवहारिकता के लिए जाने जाते थे। उनका निधन गाँधीवादी बिरादरी और विशेष रूप से गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

RNI Title Code:- MAHBIL10001

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–२४

सेवाग्राम

महात्मा गाँधी कुष्ठरोगी परचुरे शास्त्री की सेवा करते हुए, सेवाग्राम, वर्धा, १९३८

महात्मा गाँधी तथा महादेव देसाई सेवाग्राम आश्रम, वर्धा, १९४०

"I am convinced that if India is to attain true freedom and through India the world also, then sooner or later the fact must be recognized that the people will have to live in villages, not in towns, in huts, not in palaces. Crores of people will never be able to live in peace with each other in towns and palaces. They will then have no recourse but to resort to both violence and untruth."

- Mahatma Gandhi

''मैं यह मानता हूँ कि अगर हिंदुस्तान को सच्ची आजादी पानी है और हिंदुस्तान के मारफत दुनिया को भी, तब आज नहीं तो कल देहातों में ही रहना होगा; झोंपड़ियों में, महलों में नहीं। कई अरब आदमी शहरों में और महलों में सुख से और शांति से कभी नहीं रह सकते। न एक दूसरे का खून करके यानी – हिंसा से, न झूठ से – यानी असत्य से।''

– महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी और कस्तूरबा महिला आश्रम की लड़कियों के साथ, सेवाग्राम १९४१

Printed Matter

Registered with RNI Code: MAHABIL10001

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:

Gandhi Research Foundation

Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए **खोज गाँधीजी की** यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला।

प्रकाशन: २५ मार्च, २०१९; प्रेषित : २ अप्रैल, २०१९